स्वीकृति वक्तव्य

देश की सर्वोच्च संस्था, साहित्य अकादेमी द्वारा मुझे सर्वोच्च सम्मान दिए जाने पर मैं गद्‌गद् हूँ।

साहित्य अकादेमी देश के पहले प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू जी ने स्थापित की थी। उस समय से आज तक सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य को बढ़ावा देना, लेखकों के बीच भारतीयता और अपनापन बनाए रखने का प्रशंसनीय प्रयास अकादेमी सफलतापूर्वक कर रही है। निरंतर पूरे देश की भाषाओं के लेखकों के अनगिनत कार्यक्रम पूरे देश में होते रहते हैं।

साहित्य अकादेमी से मेरी पहचान उस समय के बहुचर्चित कवि और अकादेमी के सचिव प्रभाकर माचवे जी ने करवाई थी। जब मुझे मेरी पहली पुस्तक *मेरी कविता मेरे गीत* पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला। तब लगा कि जीवन में कुछ विशेष घट गया है। मेरे पति सरदार सुरिंदर सिंह जी के साथ सारा परिवार भी शामिल हुआ था। मैं सातवें आसमान पर थी।

एक चिंता भी सर उठाए खड़ी हो गई कि अब मुझे इस पुरस्कार के योग्य भी बनना हेगा। उस समय मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि यह सम्मान मुझे सर्वश्री मुल्कराज आनंद, श्री नामवर सिंह और श्री रशीद अहमद सिद्दीक़ी के साथ मिल रहा है। मुल्कराज आनंद की कहानी मेरे पाठ्यक्रम में लगी थी, कैसे विश्वास होता।

मैं बचपन से ही डोगरी लोकगीत सुनकर चमत्कृत हो जाती थी। कौन है जो इन्हें लिखता है? कौन से आसमान में रहता है? लोकगीतों में मैं दस-ग्यारह बरस की उम्र में ही छंद जोड़ने लगी थी। लड़कियाँ पूछतीं ये तुमने कहाँ से सीखा तो बहुत लाज आती।

दो-तीन बरस अपने ऐतिहासिक गाँव में रहकर मैंने लोकगीतों को क़रीब से जाना और उनमें छंद जोड़कर प्रफुल्लित भी होती रही। गीत के साथ कविता लिखने लगी तो प्रतीत हुआ कि मैं शायद इन सबसे अलग हूँ, कविता लिखती तो यूँ महसूस होता—

टूट जाते हैं कभी मेरे किनारे मुझमें
डूब जाता है कभी मुझमें समंदर मेरा।

कविता अपने आप आती है। गद्य को लाना पड़ता है। उस लम्हे में जितना भी डूब सकें उतने ही ज़्यादा क़ीमती रत्न ढूँढ़ कर लाए जा सकते हैं।

मैं सिर्फ़ डोगरी में कविता लिखती थी। हिंदी में गद्य चर्चित साहित्यकार और *धर्मयुग* के संपादक डॉ. धर्मवीर भारती के कहने पर लिखना शुरू किया। हर तरह का गद्य लिखा। चार पुस्तकें साक्षात्कारों पर लिखकर बहुत संतोष मिला। मैं ज़िंदगी से भर गई।

मेरी *इनबिन* पुस्तक घरेलू कर्मचारियों पर है। पुस्तक लिखकर लगा कि उनसे दोबारा मिल रही हूँ। उनके दुख-सुख में शरीक़ होकर मैं अपने आपको पूर्ण समझती थी। अंत में, अपनी मातृभाषा डोगरी पर लिखे ये शब्द डोगरी के लिए—

दिन निकेलया जां समाधि जोगिए ने खोली ऐ।
संझ घिरदी आई जां लंघी, गैई कोई डोली ऐ।
कोल कोई कूकी ऐ जांकर ज्याणा हस्सेया
बोल्दा लंघी गेया कोई डोगरे दी बोलीऐ।

हिंदी में—

(दिन निकला या समाधि योगी ने खोली है।
शाम घिरती आई या कोई डोली गली में से निकली
कोई कोयल कुँहकी या कोई बच्चा हँसा
या कोई गली में से डोगरी बोलता हुआ चला गया।)

— पद्‌मा सचदेव

पद्मा सचदेव
Padma Sachdev

पद्मा सचदेव, जिन्हें आज साहित्य अकादेमी अपने सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता से विभूषित कर रही है, डोगरी की प्रख्यात भारतीय कवयित्री तथा उपन्यासकार हैं। आप डोगरी भाषा की प्रथम आधुनिक कवयित्री हैं जो हिंदी में भी लिखती हैं।

पद्मा सचदेव का जन्म 1940 में जम्मू में हुआ। 1947 में भारत के विभाजन का शिकार बने संस्कृत के विद्वान प्रोफ़ेसर जयदेव बादु की तीन संतानों में सबसे बड़ी पद्मा जी ने अपनी शिक्षा की शुरुआत पवित्र नदी 'देवका' के तट पर स्थित अपने पैतृक गाँव पुरमंडल के प्राथमिक विद्यालय से की। संस्कृत विद्वानों के परिवार में जन्मी, पद्मा जी को पिता ने संस्कृत श्लोक पढ़ने की कला सिखाई। पद्मा सचदेव के छंदों की लयबद्ध सुंदरता संस्कृत काव्य के साथ आपके परिचित होने का प्रत्यक्ष परिणाम है। एक युवा लड़की के रूप में आप लोकगीतों में स्वयं छंद जोड़कर तथा गाकर सबको विस्मित कर देती थीं। किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि यह आपकी स्वरचित रचनाएँ हैं। लोककथाओं और लोकगीतों की समृद्ध वाचिक परंपरा के साथ स्वतंत्रता संग्राम के दौरान डोगरी के आकर्षण की पुनर्खोज ने आपके विकास को प्रेरित किया तथा आपको एक कवयित्री के रूप में उत्कृष्ट बनाया। आज आप मानती हैं कि आपकी कविता पर सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव आपके प्रिय डुग्गर प्रदेश के मधुर लोकगीतों से आया है। आप मानती हैं कि यह उस प्रेम का प्रभाव है जिसकी वजह से आप अपने लोगों से जुड़ी रहीं तथा इससे आपको उनकी उम्मीदों, भय और आकांक्षाओं को समझने में मदद मिली और इन सबने आपकी कविता को जीवन के प्रति प्राकृतिक लगाव दिया, जिसने वर्षों से इतने सारे दिलों को जीता है।

युवा पद्मा गाँव से शहर ऐसे समय में आईं जब दीनूभाई पंत, रामनाथ शास्त्री, अलमस्त, दीप, मधुकर तथा यश शर्मा की कविताओं को युवा लोगों द्वारा उत्सुकता से सुना तथा उत्सुकतापूर्वक पढ़ा जाता था। आप द्वारा लिखित कविता *राजा दियां मंडियाँ* से ख़ूब

Padma Sachdev, on whom Sahitya Akademi is conferring its highest honour, the Sahitya Akademi Fellowship, is a distinguished Indian poet and novelist in Dogri. She is the first modern woman poet of Dogri language who also writes in Hindi.

Padma Sachdev was born in Jammu in 1940. Being the eldest of the three children of Professor Jai Dev Badu, a Sanskrit scholar who became the victim of India's Partition in 1947, she started her education in the primary school of her ancestral village Purmandal, situated on the banks of the sacred stream Devaka. Born in a family of Sanskrit scholars, she was taught the art of reciting Sanskrit shlokas by her father. The rhythmic beauty of Padma Sachdev's verses is a direct outcome of her acquaintance with Sanskrit poetry. As a young girl she would amaze everyone by adding stanzas of her own to folk songs and singing them. No one imagined that these were her own creations. The rediscovery during the freedom struggle of the charm of Dogri, with its rich oral tradition of folktales and folksongs, inspired her growth and shaped her into a poetess par excellence. Today, she acknowledges that one of the most important influences on her poetry comes from the sonorous folk songs of her dear Duggar Pradesh. She knows that it was this affectionate influence that kept her close to her people, helped her understand their hopes, fears and aspirations and gave her poetry that natural feel for life that has won so many hearts over the years.

The young Padma migrated from her village to the city at a time when the poems of Deenubhai Pant, Ram Nath Shastri, Almast, Deep, Madhukar and Yash Sharma were eagerly heard and enthusiastically recited by the young.

नाम हुआ, जिसे आपने 14 वर्ष की उम्र में लिखा था। इस कविता को आधुनिक डोगरी साहित्य की एक कालजयी कविता माना जाता है तथा अपने शिल्प-कौशल, कथ्य और ध्वनि के लिए इस कविता की सराहना की गई। मानसिक रूप से विक्षिप्त महिला की दृष्टि से कल्पित, यह कविता अमानवीयता और शक्तिसंपन्न की संवेदनहीनता के विरुद्ध दबे-कुचले और शोषित ग़रीबों की भावनाओं का स्वर था। इस कविता को डोगरी कविता के लगभग सभी संकलनों में शामिल किया गया तथा पद्मा जी के कार्य-प्रदर्शनों की सूची में इसे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। 1959 में जम्मू-कश्मीर अकादमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ द्वारा प्रकाशित *मधुकन* नामक सबसे होनहार युवा कवियों के डोगरी कविता-संचयन में पहली बार इस कविता को सात छोटे अंशों के साथ प्रकाशित किया गया।

कॉलेज के अपने प्रथम वर्ष में, आप डोगरी की ऐसी प्रथम कवयित्री बनीं, जब आपने स्थापित डोगरी कवियों के साथ मंच साझा किया और जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री सहित बहुत से प्रतिष्ठित दर्शकों/श्रोताओं के सम्मुख जम्मू में आयोजित कवि सम्मेलन में एक स्वरचित गीत प्रस्तुत किया। अगली सुबह, वह गीत एक स्थानीय समाचार-पत्र *संदेश* में प्रकाशित हुआ।

1969 में, आपने अपने पहले कविता-संग्रह *मेरी कविता मेरे गीत* के साथ राष्ट्रीय साहित्यिक परिदृश्य में पर्दापण किया। इसकी भूमिका हिंदी के क़द्दावर कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखी। उन्होंने लिखा : "पद्मा की कविता सुनकर मुझे लगा कि मैं अपनी क़लम फेंक दूँ क्योंकि जो बातें पद्मा कहती हैं, वही असली कविता है।" इस पुस्तक को अंततः 1971 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बाद में, आपने नियमित अंतरालों पर अपनी कविताओं के 5 और संग्रह प्रकाशित किए, जिनके शीर्षक सार्थक, प्रतीकात्मक और महत्त्वपूर्ण हैं। अपने ख़ास मिजाज़ को प्रतिबिंबित करने के अलावा आप समय की चिंताओं को प्रदर्शित करती हैं। *तवी ते चनहाँ*, दो भागों में है, जिसमें दो प्रकार की कविताएँ हैं, तुकांत और अतुकांत। *नेहरियाँ गलियाँ* (अँधेरी गलियाँ) का भाव आत्मनिरीक्षण, मोहभंग, अदम्य तड़प और पर्यावरण के प्रति एक विशेष चिंता का है। *पोटा पोटा निंबल* में व्यक्तित्व आकाश को धीरे-धीरे साफ़ करता हुआ दिखता है, किन्हीं अदृश्य हाथों की उँगलियों की पोरों पर मेघ धारण

She made a name for herself with her poem *Raja Diyan Mandiyan*, which was written at the age of 14. This poem is considered one of the classics of modern Dogri literature, and is appreciated for its craftsmanship, content and tone. Conceived through the eyes of a mentally deranged woman, the poem voices the feelings of the oppressed and exploited poor against the inhumanity and insensitivity of the powerful. The poem has been included in almost all the anthologies of Dogri poetry and occupies an important place in the repertoire of Padma Sachdev's works. For the first time, this poem, including seven smaller pieces of her verse, appeared in print in a selection of Dogri poetry of the most promising young poets, titled *Madhukan*, published by the J & K Academy of Art, Culture and Languages in 1959.

While in her first year of college, she became the first poetess of Dogri when she shared the stage with established Dogri poets and recited a self-composed song at a *Kavi Sammelan* in Jammu before a large and distinguished audience, including the chief minister of Jammu and Kashmir. The next morning, this song was published in a local Urdu paper *Sandesh*.

In 1969, with her first collection of poems, *Meri Kavita Mere Geet*, she was placed at the forefront of national literary scene. In his preface to this work, Ramdhari Singh Dinkar, a stalwart among Hindi poets, wrote: *"Padma ki kavita sun kar mujhe laga mein apni kalam phaink doon kyoonki jo batein Padma kahati hai, wahi asli kavita hai"*. (After reading Padma's poems I felt that I should throw my pen away–for what Padma writes indeed is true poetry.) The book eventually got her the Sahitya Akademi Award in 1971, making her the first Dogri poetess to receive it.

Subsequently, she published five more collections of her poems at regular intervals, the titles of which are meaningful, symbolic and significant. Besides reflecting her predominant moods, they also display the concerns of the moment. *Tawi Te Chanhaan*, in two parts, contains two types of poems, rhymed and unrhymed. The mood of *Nehriyan Galiyaan* (Dark Lanes) is one of introspection, disenchantment, irrepressible yearning and

किए जा रहे हैं; तथा आप समुद्र को देखती हैं जिसमें नदियाँ अपनी पहचान खो कर विलीन हो जाती हैं। आपकी कुछ अन्य पुस्तकों में शामिल हैं - *उत्तर बैहनी, तैंथियाँ, अक्खर कुंड, लालदियाँ, सुग्गी, चित्त चेते, शब्द मिलावा, दीवानख़ाना, मितवाघर, अमराई, गोदभरी, बू तूँ राज़ी, अब न बनेगी देहरी, नौशीन, मैं कहती हूँ आँखिन देखी, जम्मू जो कभी शहर था* तथा *बारहदरी*।

पद्मा सचदेव के साहित्य में भारतीय स्त्री के हर्ष और विषाद, मनोभावों और विपदाओं को दर्शाया गया है। यद्यपि आप स्त्रियों पर हो रहे सामाजिक अन्याय के प्रति जागरूक हैं, लेकिन आपकी महिला पात्र हर समय अपनी गरिमा बनाए रखती हैं। डॉ. हरभजन सिंह कहते हैं, "मैंने आज तक ऐसी कोई लेखिका नहीं देखी जो इतनी सकारात्मक हो। आपकी कविता स्त्रीत्व को पूर्णता में प्रिया, बहन अथवा माँ के रूप में प्रस्तुत करती है।"

व्यापक श्रोताओं को अपनी भाषा का परिचय देने की उत्सुकता ने पद्मा सचदेव में गद्य-लेखन की लौ लगा दी। यद्यपि आप डोगरी में कहानियाँ लिखती हैं, किंतु गद्य लेखन की आपकी भाषा हिंदी है। आप निरंतर अपनी भाषा, वर्तमान घटनाओं, त्यौहारों तथा भारतीय स्त्रियों की समस्याओं जैसे ज्वलंत विषयों पर समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में लिखती रही हैं। आपको आपकी मातृभाषा डोगरी में काव्य व गद्य लेखन के लिए जाना जाता है। आपका यह मानना है कि जब बात दिल की हो तब अभिव्यक्ति का उपयुक्त एवं उचित माध्यम मातृभाषा ही होती है, इसीलिए आपके संपूर्ण महत्त्वपूर्ण कार्य डोगरी में हैं।

अब तक डोगरी में आपके 8 कविता-संग्रह, 3 गद्य की पुस्तकें तथा हिंदी में 19 कृतियाँ; जिनमें - कविता, साक्षात्कार, कहानियाँ, उपन्यास, यात्रावृत्तांत तथा संस्मरण शामिल हैं, प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा, आपकी 11 अनुवाद की कृतियाँ भी हैं, जिनमें आपने डोगरी से हिंदी तथा हिंदी से डोगरी, पंजाबी से हिंदी तथा हिंदी से पंजाबी, अंग्रेज़ी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेज़ी में भी परस्पर अनुवाद किया है। आपकी जिन कृतियों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया गया है, उनमें शामिल हैं - *ए हैंड फुल ऑफ़ सन, वेयर हैज़ माई गुल्ला गोन* तथा *ए ड्रॉप इन द ओशन*। आपकी कहानियों को टेली-धारावाहिकों तथा लघु फ़िल्मों में रूपांतरित किया गया है तथा आपके हिंदी और डोगरी गीतों को व्यावसायिक हिंदी सिनेमा ने भी

also a certain concern for the environment. In *Pota Pota Nimbal*, the poet's persona looks at the sky slowly clearing up, the clouds being lifted by the finger-tips of some invisible hand, and she looks at the sea as the rivers lose their identities and merge with it. Some of her other books include *Uttar Vahini*, *Tainthian*, *Akhkhar Kund*, *Laaladiyan*, *Suggi*, *Chitt Chete*, *Sabad Milawa*, *Deewankhana*, *Mitwa Ghar*, *Amrai*, *Gode Bhari*, *Bu Tu Raazi*, *Abna Banegi Dehri*, *Nausheen*, *Main Kehti Hoon*, *Ankhin Dekhi*, *Jammu Jo Kabhi Shehar Tha* and *Barahdari*.

Padma Sachdev's literature depicts the joys and sorrows, moods and misfortunes of Indian womanhood. Even though she is conscious of the social injustices heaped upon women, her women characters maintain their dignity at all times. Dr Harbhajan Singh says, "I have not come across any other woman writer who is so positive…her poetry projects womanhood in its fullness as beloved, sister or mother."

Her eagerness to introduce her language to wider audiences kindled the flame of prose-writing in Padma Sachdev. Though she wrote short stories in Dogri, Hindi was to be her language for prose. She has repeatedly written for newspapers and periodicals about her language, current events, festivals and the burning topics of Indian women and their problems. Known both as a poet and prose writer in her native Dogri, and mainly for her prose in Hindi, she believes that when it is a matter of the heart it is only the mother tongue that is a fit and suitable vehicle of expression, and hence, all her important poetical works are in Dogri.

Till date she has published eight books of poetry in Dogri, three of prose and 19 titles in Hindi which include poetry, interviews, short stories, novels, travelogues and memoirs. Besides these, she also has 11 translations from Dogri into Hindi and vice versa, Punjabi into Hindi and vice-versa, and English into Hindi and vice-versa. Her works which have been translated into English include *A Handful of Sun*, *Where Has My Gulla Gone* and *A Drop in the Ocean*. Her stories have been adapted for tele-serials and short films, and some of her Hindi

इस्तेमाल किया है। आपने अपनी भाषा को पहला संगीत डिस्क भी दिया, जिसमें न केवल गीत बल्कि धुनें भी रची हुई हैं और उन्हें भारत की स्वरकोकिला सुश्री लता मंगेशकर ने स्वरबद्ध किया है। डिस्क का काव्यात्मक शीर्षक था- *डोगरियाँ गी मिलन आई चाननी* (डोगरियों से मिलने आई चाँदनी)।

आपको साहित्य अकादेमी पुरस्कार के अलावा केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा कविता के लिए कबीर सम्मान, सरस्वती सम्मान, जम्मू-कश्मीर अकादमी का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार तथा भारत सरकार द्वारा पद्म श्री सहित कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं।

सर्वकला संपन्न, पद्मा सचदेव ने भारतीय साहित्यिक परिदृश्य में अपने तथा डोगरी काव्य के लिए एक विशिष्ट स्थान बनाया है।

साहित्य अकादेमी श्रीमती पद्मा सचदेवा को अपने सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता से विभूषित करते हुए गौरवान्वित महसूस कर रही है।

12 जून 2019, दिल्ली

and Dogri songs have been used by commercial Hindi cinema as well. She also gave to her language the first music disc, composing not only the lyrics but also the tunes, and these were sung by none other than the Nightingale of India, Ms Lata Mangeshkar. The disc had the poetic title *Dogrian Gi Milan Ayee Chanani* (Moonlight Comes to Meet the Dogras).

Besides the Sahitya Akademi Award, Padma Sachdev is the recipient of several other awards and honours including the National Award from Kendriya Hindi Sansthan, Kabir Samman for poetry given by the Government of Madhya Pradesh, Saraswati Samman, Jammu & Kashmir Academy's Lifetime Achievement Award, Soviet Land Nehru Award, Sahitya Akademi Prize for Translation and the Padma Shri from the Government of India.

All in all, Padma Sachdev has won a distinct place for herself and Dogri poetry in the Indian literary scenario.

Sahitya Akademi is happy to confer its highest honour, the Fellowship, on Padma Sachdev.

12 June 2019, Delhi